वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:5 अंक: 253 रविवार 1 फरवरी 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

@ पेज 2 पर

इंडिया स्टोनमार्ट-2026: वैश्विक मानचित्र पर चमकेगा राजस्थान का पत्थर उद्योग

पत्थर उद्योग को मिलेगा अंतर्राष्ट्रीय बाजार

नवाचार और तकनीक का संगम होगा 13वां इंडिया स्टोनमार्ट, निर्यात के नए द्वार खोलने की तैयारी में राज्य सरकार

फरवरी में आयोजित होगा 'इंडिया स्टोनमार्ट-2026', खरीदार-विक्रेता सम्मेलन पर रहेगा विशेष जोर

जयपुर. कासं

राजस्थान की माटी की पहचान यहां के भव्य महलों और किलों से है, जो सदियों पुराने पत्थरों की कलाकारी का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इसी विरासत को आधुनिक व्यापार और तकनीक से जोड़ने के लिए राजस्थान सरकार एक बार फिर 'इंडिया स्टोनमार्ट' के रूप में एक विश्वस्तरीय मंच सजाने जा रही है। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शनिवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में आयोजित एक उच्चस्तरीय बैठक में 13वें इंडिया स्टोनमार्ट-2026 की तैयारियों की व्यापक समीक्षा की और अधिकारियों को इस आयोजन को ऐतिहासिक बनाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

पत्थर उद्योग: राजस्थान की आर्थिक रीढ़

मुख्यमंत्री ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि राजस्थान का पत्थर उद्योग न केवल प्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, बल्कि यह लाखों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार भी प्रदान करता है। उन्होंने बल देकर कहा कि राज्य सरकार इस उद्योग के विकास, विस्तार और विविधीकरण के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री के अनुसार, आगामी इंडिया स्टोनमार्ट प्रदेश की पत्थर इकाइयों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी क्षमता प्रदर्शित करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करेगा। शर्मा ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि एक ऐसी कार्य योजना बनाई जाए जिससे पत्थरों की समृद्धि, विविधता और टिकाऊपन की जानकारी प्रभावी ढंग से पहुंचे।

अंतर्राष्ट्रीय सहभागिता और वैश्विक संपर्क

मुख्यमंत्री ने विशेष रूप से विदेशी और प्रवासी भारतीय प्रतिभागियों की संख्या बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इंडिया स्टोनमार्ट-2026 में 'कंट्री पेवेलियन' (विभिन्न देशों के प्रदर्शन क्षेत्र) और 'स्टेट पेवेलियन' (विभिन्न राज्यों के प्रदर्शन क्षेत्र) की तैयारी समय पर पूर्ण की जानी चाहिए। आयोजन का मुख्य उद्देश्य राजस्थान के मार्बल, ग्रेनाइट, सैंडस्टोन (बलुआ पत्थर), कोटा स्टोन और क्वार्ट्ज को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला (सप्लाई चेन) का अभिन्न हिस्सा बनाना है। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि खरीदार-विक्रेता सम्मेलन (बायर-सेलर मीट) का आयोजन इतनी कुशलता से किया जाए कि प्रदेश के लघु और मध्यम उद्यमियों को सीधे अंतर्राष्ट्रीय खरीदारों से जुड़ने और निर्यात के नए समझौते करने का अवसर मिले। स्टोनमार्ट के साथ ही आयोजित होने वाले 'जयपुर आर्किटेक्चर फेस्टिवल' को लेकर मुख्यमंत्री ने उत्साह व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस उत्सव के माध्यम से दुनिया भर के नामचीन वास्तुकारों और डिजाइनरों को राजस्थान आमंत्रित किया जाए। जब विश्व स्तर के विशेषज्ञ यहाँ के पत्थरों के उपयोग और उनकी कलात्मकता को देखेंगे, तो वैश्विक निर्माण परियोजनाओं में

राजस्थान के पत्थरों की मांग स्वतः बढ़ेगी। यह उत्सव प्रदेश के पत्थर व्यवसाय को एक नई वैश्विक पहचान दिलाने में मील का पत्थर साबित होगा।

परंपरा और कला का अद्भुत संरक्षण

मुख्यमंत्री ने स्टोनमार्ट के दौरान आयोजित होने वाले 'शिल्पग्राम' की तैयारियों की भी जानकारी ली। शिल्पग्राम का उद्देश्य उन पारंपरिक पत्थर शिल्पकारों और मूर्तिकारों को मंच देना है, जो अपनी छैनी-हथौड़ी से पत्थरों में जान फूंक देते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि तकनीक के साथ-साथ हमें अपनी पारंपरिक हस्तकला का भी संरक्षण करना है, क्योंकि यही हमारी सांस्कृतिक विशिष्टता है।

प्रदर्शनी के मुख्य आकर्षण

फरवरी के प्रथम सप्ताह में आयोजित होने वाले इस 13वें संस्करण में पत्थर उद्योग से जुड़ा हर पहलू एक ही छत के नीचे दिखाई देगा: **प्राकृतिक पत्थर:** विभिन्न प्रकार के मार्बल, ग्रेनाइट, कोटा स्टोन, स्लेट, क्वार्ट्ज और दुर्लभ सैंडस्टोन का विशाल प्रदर्शन। **आधुनिक मशीनरी:** पत्थर की कटाई, पॉलिशिंग और फिनिशिंग के लिए उपयोग होने वाले अत्याधुनिक उपकरण और भारी मशीनरी। **तकनीक:** पत्थर खनन (माइनिंग) की नई तकनीकें जो पर्यावरण के अनुकूल और सुरक्षित हों। **भारी वाहन:** निर्माण और खनन कार्यों में प्रयुक्त होने वाली विशाल अर्थमूविंग मशीनें। मुख्यमंत्री ने बैठक में उपस्थित रीको और सीडीओएस के अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि आयोजन में आने वाले किसी भी प्रतिनिधि या पर्यटक को असुविधा न हो। उन्होंने कहा कि राजस्थान अब 'निवेश गंतव्य' के रूप में उभर रहा है और स्टोनमार्ट जैसे आयोजन हमारे 'इज ऑफ डूइंग बिजनेस' के दावों को धरातल पर सिद्ध करते हैं। बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) अखिल अरोड़ा ने तैयारियों का विस्तृत खाका प्रस्तुत किया। इस अवसर पर लघु उद्योग भारती के प्रतिनिधियों ने भी अपने सुझाव दिए, जिन पर मुख्यमंत्री ने सकारात्मक निर्णय लेने का आश्वासन दिया। इंडिया स्टोनमार्ट-2026 केवल एक व्यापारिक प्रदर्शनी नहीं है, बल्कि यह राजस्थान के पत्थरों की भव्यता और यहां के उद्यमियों के पुरुषार्थ का उत्सव है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार जिस प्रकार इस आयोजन को वैश्विक रूप दे रही है, उससे निश्चित ही आने वाले समय में राजस्थान 'ग्लोबल स्टोन हब' के रूप में अपनी स्थिति और मजबूत करेगा। प्रदेश के पत्थर उद्योग के लिए यह आयोजन न केवल नए व्यापारिक अनुबंध लेकर आएगा, बल्कि रोजगार के नए अवसर भी सृजित करेगा।

आधुनिक युग में बुजुर्गों की चुनौतियां

आधुनिक युग तकनीकी प्रगति, तेज जीवनशैली और भौतिक सुख-सुविधाओं का युग है। जहाँ एक ओर यह विकास मानव जीवन को सरल बनाता है, वहीं दूसरी ओर इस परिवर्तन ने समाज के एक महत्वपूर्ण वर्ग–बुजुर्गों–के समक्ष अनेक नई चुनौतियाँ भी खड़ी कर दी हैं। अनुभव, संस्कार और मार्गदर्शन के प्रतीक बुजुर्ग आज स्वयं को उपेक्षित और अकेला महसूस करने लगे हैं।

1. संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर

पूर्व में संयुक्त परिवारों में बुजुर्गों को सम्मान, सुरक्षा और अपनापन प्राप्त होता था। आज एकल परिवारों की बढ़ती प्रवृत्ति ने उन्हें अकेलेपन की ओर धकेल दिया है। बच्चे रोजगार या शिक्षा के कारण अन्य शहरों में बस जाते हैं, जिससे बुजुर्ग भावनात्मक सहारे से वंचित रह जाते हैं।

2. भावनात्मक उपेक्षा

भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बावजूद बुजुर्गों को समय, संवाद और अपनापन नहीं मिल पाता। मोबाइल और सोशल मीडिया के दौर में पीढ़ियों के बीच संवाद कम हो गया है, जिससे बुजुर्ग अपने ही परिवार में स्वयं को अनसुना महसूस करते हैं।

3. स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ

बढ़ती उम्र के साथ शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ स्वाभाविक हैं। आधुनिक जीवनशैली, तनाव और समुचित देखभाल के अभाव में ये समस्याएँ और भी गंभीर हो जाती हैं। महँगा इलाज तथा देखभाल की कमी बुजुर्गों के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई है।

4. आर्थिक असुरक्षा

हर बुजुर्ग आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं होता। सेवानिवृत्ति के बाद आय के स्रोत सीमित हो जाते हैं और बढ़ती महँगाई उनकी परेशानियों को और बढ़ा देती है। कई बार उन्हें अपनी छोटी-छोटी आवश्यकताओं के लिए भी दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है।

5. तकनीकी दूरी

डिजिटल युग में बैंकिंग, स्वास्थ्य सेवाएँ और सरकारी सुविधाएँ ऑनलाइन हो गई हैं। तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण अनेक बुजुर्ग इन सेवाओं का समुचित लाभ नहीं उठा पाते और स्वयं को असहाय अनुभव करते हैं।

6. सम्मान में कमी

आधुनिक सोच में अनुभव की तुलना में तेजी और नवाचार को अधिक महत्व दिया जाने लगा है। परिणामस्वरूप बुजुर्गों के अनुभव और सलाह को अक्सर पुराना या अप्रासंगिक मान लिया जाता है, जिससे उनका आत्मसम्मान आहत होता है। बुजुर्ग किसी भी समाज की जड़ होते हैं। उनकी उपेक्षा समाज को खोखला बना देती है। आवश्यकता है कि हम आधुनिकता और मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन बनाएँ। बुजुर्गों को सम्मान, संवाद, सुरक्षा और स्नेह देकर ही हम एक स्वस्थ और संस्कारित समाज का निर्माण कर सकते हैं। बुजुर्गों का सम्मान वास्तव में हमारे संस्कारों की पहचान है।

हर बुजुर्ग आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं होता। सेवानिवृत्ति के बाद आय के स्रोत सीमित हो जाते हैं और बढ़ती महँगाई उनकी परेशानियों को और बढ़ा देती है। कई बार उन्हें अपनी छोटी-छोटी आवश्यकताओं के लिए भी दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है।

अनिल माथुर
ज्वाला-विहार, जोधपुर

भीषण शीतलहर के बीच मुनिश्री योगसागर महाराज ने किया केशलोच

भक्ति और आत्मबल का अनूठा संगम

रामगंजमंडी. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन समाज की कठिन तपस्या और आत्म-अनुशासन का जीवंत उदाहरण शनिवार को रामगंजमंडी में देखने को मिला। वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के शिष्य और वर्तमान आचार्य श्री समयसागर महाराज के आज्ञानुवर्ती ज्येष्ठ मुनि, निर्यापक श्रमण मुनिश्री 108 योगसागर महाराज ने भीषण शीतलहर के बीच अपने केशों का लोचन (केशलोच) किया। इस कठिन साधना के साथ ही आज मुनिश्री का उपवास (बेला) भी रहेगा।

क्या है केशलोच की परंपरा?

दिगंबर जैन मुनि परंपरा के अनुसार, साधु अपने बालों को हटाने के लिए किसी कैंची, उस्तरे या आधुनिक उपकरण का उपयोग नहीं करते हैं। वे अपने हाथों से ही सिर और दाढ़ी के बालों को एक-एक कर उखाड़ते हैं। जैन दर्शन में इसे मुनियों के '28 मूलगुणों' में से एक अनिवार्य क्रिया माना गया है।

यह प्रक्रिया मुख्य रूप से तीन भावों का प्रतीक है: अनासक्ति: शरीर के प्रति मोह का त्याग करना। **सहनशीलता:** शारीरिक पीड़ा को समभाव से सहने का अभ्यास। **अहिंसा:** बालों में जीवोत्पत्ति (जूं आदि) की संभावना को समाप्त कर सूक्ष्म जीवों की रक्षा करना।

सहनशीलता की पराकाष्ठा

मुनिश्री योगसागर महाराज ने जब कड़ाके की ठंड के बीच इस प्रक्रिया को पूर्ण किया, तो वहां उपस्थित श्रद्धालु भाव-विभोर हो उठे। मुनिश्री के चेहरे पर पीड़ा के स्थान पर असीम शांति और मुस्कान देख हर कोई दंग रह गया। जैन धर्म के अनुसार, पंचम काल (वर्तमान युग) में इस प्रकार की कठिन साधना केवल दिगंबर संत ही कर सकते हैं। यह कोई सहज कार्य नहीं है; इसके लिए अपार आध्यात्मिक बल और इंद्रिय निग्रह की आवश्यकता होती है।

संत शिरोमणि आचार्य श्री
108 विद्यासागर जी महाराज

अर्हं ध्यान योग

आशीर्वाद
आचार्य श्री 108 समयसागर जी महाराज

श्री जम्बूस्वामी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र चौरासी मथुरा

में

संत शिरोमणि आचार्य भगवन श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
एवं
आचार्य श्री 108 समय सागर जी महाराज के परम शिष्य

अर्हं श्री मुनि 108 प्रणम्य सागर जी महाराज का

1 फरवरी 2026, रविवार

29वां दीक्षा दिवस महोत्सव

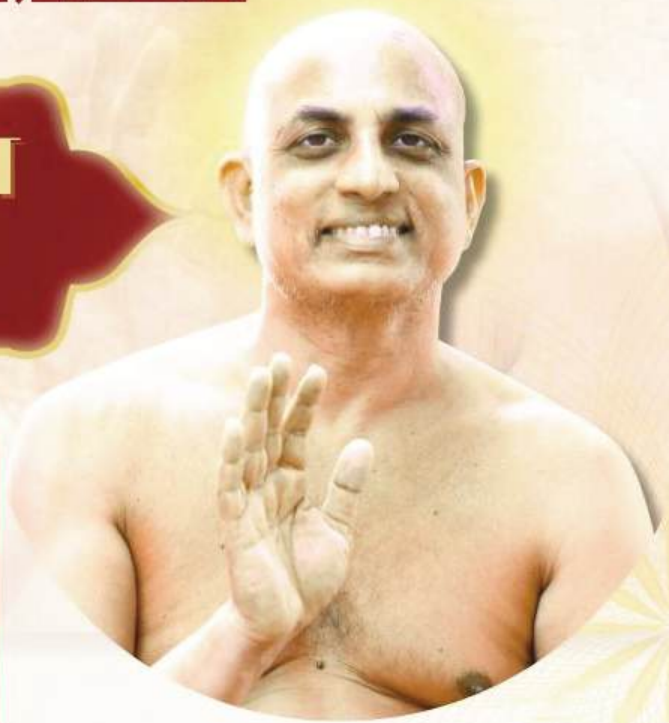

मांगलिक कार्यक्रम

रविवार, 1 फरवरी 2026

• ध्वजारोहण	प्रातः 8:30 बजे
• मंगल प्रवचन	प्रातः 9:00 बजे
• मंगल आहारचर्या	प्रातः 10:00 बजे
• दीक्षा दिवस कार्यक्रम	दोप. 01:00 बजे
• गुरुभक्ति एवं मंगल आरती	सांय 6:00 बजे

विशेष कार्यक्रम

अतीत की रेखाएँ

नृत्य–नाटिका में रची
रूबी से मुनि 'प्रणम्य' तक की यात्रा का मंचन

आयोजक: श्री जम्बूस्वामी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र चौरासी कमेटी एवं सकल जैन समाज मथुरा (उ.प्र.)

@ArhamDhyanYog | चौरासी मथुरा

Designed by ExtraValueCart 8788840192

वेद ज्ञान

अमेरिका से आगे निकलता शेष विश्व

प्रहलाद सबनानी

20 जनवरी 2025 को जब डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका को पुनः महान बनाएं के नारे के साथ सत्ता संभाली, तो पूरे विश्व ने उनकी संरक्षणवादी नीतियों का प्रभाव देखा। वर्ष 2025 गवाह रहा कि ट्रंप ने मित्र देशों सहित लगभग सभी राष्ट्रों से होने वाले आयात पर भारी 'आयात शुल्क' (टैरिफ) थोप दिया। उनका मानना था कि इससे अमेरिका में उत्पादन बढ़ेगा और शेष विश्व की अर्थव्यवस्थाएं कमजोर होंगी। परंतु वर्ष 2025 के आर्थिक आंकड़े एक अलग ही कहानी बयां कर रहे हैं। अमेरिकी नागरिकों पर बढ़ता बोझ हैरानी की बात यह है कि आयात शुल्क का प्रहार अन्य देशों पर होने के बजाय स्वयं अमेरिकी नागरिकों पर उल्टा पड़ा है। अमेरिका में उत्पादों की कीमतों में बेतहाशा वृद्धि हुई है और मुद्रास्फीति की दर 3 से 4 प्रतिशत के बीच बनी हुई है। आज औसत अमेरिकी नागरिक खाद्य सामग्री पर पांच वर्ष पहले की तुलना में 30 प्रतिशत अधिक व्यय कर रहा है। उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतों में 22 प्रतिशत और आवास की कीमतों में 30 प्रतिशत की उछाल दर्ज की गई है। शोध बताते हैं कि आयात शुल्क का लगभग 96 प्रतिशत वित्तीय भार अमेरिकी जनता ने ही वहन किया है। सकल घरेलू उत्पाद और वैश्विक परिदृश्य आर्थिक विकास की गति में भी अमेरिका पिछड़ता दिख रहा है। वर्ष 2024 में अमेरिका की विकास दर 2.8 प्रतिशत थी, जो 2025 में घटकर 2.1 प्रतिशत रह गई। इसके विपरीत, वैश्विक विकास दर 2.8 प्रतिशत पर स्थिर बनी रही। उभरती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल 76 प्रतिशत देशों की प्रति व्यक्ति विकास दर अमेरिका से अधिक रही है। भारत ने तो इस दौरान शानदार प्रदर्शन किया; जहा2024 में भारत की विकास दर 6.5 प्रतिशत थी, वहीं 2025 में यह बढ़कर 7.2 प्रतिशत हो गई। शेयर बाजार और विदेशी व्यापार पूंजी बाजार के मोर्चे पर भी अमेरिका अन्य देशों की तुलना में फीका रहा। 2025 में अमेरिकी निवेशकों को शेयर बाजार से मात्र 18 प्रतिशत की आय हुई, जबकि यूरोप में यह 35 प्रतिशत, चीन में 31 प्रतिशत और अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं में 34 प्रतिशत रही।

संपादकीय

आर्थिक दिशा और भविष्य के भारत का घोषणापत्र

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा प्रस्तुत किया जाने वाला आगामी बजट केवल आय-व्यय का वार्षिक लेखा-जोखा नहीं, बल्कि देश की आर्थिक दिशा और सामाजिक प्राथमिकताओं का दर्पण है। आज जब भारत वैश्विक अनिश्चितताओं, भू-राजनीतिक तनावों और तकनीकी परिवर्तनों के बीच एक उभरती शक्ति के रूप में खड़ा है, तब यह बजट और भी अर्थपूर्ण हो जाता है। यह केवल आंकड़ों का संकलन नहीं, बल्कि ''भविष्य के भारत'' की एक विस्तृत झलक है।

क्रय-शक्ति और समावेशी विकास बजट से सबसे पहली और महत्वपूर्ण अपेक्षा निम्न वर्ग की क्रय-शक्ति बढ़ाने की है। किसी भी अर्थव्यवस्था की वास्तविक मजबूती तभी संभव है जब उसके निचले पायदान पर खड़ा व्यक्ति उपभोग में भागीदार बने। यदि निम्न आय वर्ग की आय बढ़ती है, तो मांग में तेजी आती है, जो सीधे तौर पर उत्पादन और निवेश को गति देती है। इस दिशा में महात्मा गांधी ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना का सुदृढ़ीकरण, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण और असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा के ठोस उपाय अपेक्षित हैं। शहरी विकेंद्रीकरण की आवश्यकता भारत का तेजी से होता शहरीकरण महानगरों पर जनसंख्या और बुनियादी ढांचे का दबाव बढ़ा रहा है। विश्व बैंक के अध्यक्ष द्वारा सुझाया गया 'शहरी विकेंद्रीकरण' का विचार आज अत्यंत प्रासंगिक है। बजट में द्वितीय और तृतीय श्रेणी के शहरों को आर्थिक गतिविधियों का केंद्र बनाने के लिए विशेष ढांचागत पैकेज और डिजिटल संपर्क पर ध्यान देना चाहिए। छोटे शहरों को विकसित करना न केवल महानगरों का बोझ कम करेगा, बल्कि क्षेत्रीय असंतुलन को भी पाटने का काम करेगा। वैश्विक चुनौतियां और अवसर संरक्षणवाद के इस दौर में भारत के पास विशाल घरेलू बाजार और युवा कार्यशक्ति की अद्वितीय ऊर्जा है। बजट को आयात शुल्क की चिंताओं से आगे बढ़कर व्यापारिक अवसरों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। 'भारत में बनाओ' और 'आत्मनिर्भर भारत' को केवल नारों तक सीमित न रखकर सरल कर संरचना, अनुसंधान में निवेश और व्यापार सुगमता के माध्यम से व्यावहारिक नीतिगत समर्थन देना अनिवार्य है। निर्यात-उन्मुख उद्योगों और नए उद्यमों को प्रोत्साहन देकर भारत वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में अपनी पकड़ मजबूत कर सकता है। मध्यम वर्ग और लघु उद्योग मध्यम वर्ग, जो देश का सबसे बड़ा करदाता और उपभोक्ता है, अक्सर बजट की मुख्यधारा से उपेक्षित रह जाता है। बढ़ती महंगाई और आवास ऋण के बोझ के बीच, आयकर श्रेणी में तर्कसंगत सुधार और स्वास्थ्य-शिक्षा पर कर राहत इस वर्ग की बचत को बढ़ाकर अर्थव्यवस्था में नई जान फूंक सकती है। इसी तरह, रोजगार का सबसे बड़ा स्रोत होने के नाते सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र को सस्ता ऋण और तकनीकी उन्नयन के लिए विशेष पैकेज मिलना चाहिए। सतत भविष्य की नींव भविष्य के भारत की कल्पना पर्यावरणीय स्थिरता के बिना अधूरी है।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

शिक्षा खौफनाक नहीं, बल्कि स्नेह एवं हौसलों का माध्यम बने

ललित गर्ग

जीवन को दिशा देने वाली शिक्षा यदि भय, हिंसा और दमन का पर्याय बन जाए, तो वह सभ्यता की सबसे बड़ी विडंबना कही जाएगी। हाल के वर्षों में पढ़ाई के नाम पर बच्चों पर बढ़ता दबाव, घरों और स्कूलों में हिंसक व्यवहार तथा प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ ने शिक्षा की मूल आत्मा पर गहरा आघात किया है। फरीदाबाद की हालिया हृदयविदारक घटना, जिसमें महज गिनती न सीख पाने के कारण एक पिता की क्रूरता ने मासूम बच्ची को मौत के मुंह में धकेल दिया, पूरे समाज को कठघरे में खड़ा करती है। विकृत होती मानसिकता और शिक्षा का चेहरा आज यह सोचना ही शर्मनाक है कि ज्ञान की इस सदी में भी हम यह मानते हैं कि डर और मार से बच्चों को बेहतर बनाया जा सकता है। शिक्षा धीरे-धीरे मानवीय संवेदनाओं से कटती जा रही है। अब परीक्षा परिणाम, रैंक और अंक तालिका ही शिक्षा का असली चेहरा बन गए हैं। अभिभावक अपने अधूरे सपनों का बोझ बच्चों के नाजुक कंधों पर लाद देते हैं और स्कूल उन्हें 'प्रदर्शन की मशीन' मानकर आंकने लगते हैं। परिणाम यह होता है कि बच्चा पढ़ाई को उत्सव या खोज की प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक खौफनाक दायित्व समझने लगता है। भय का मनोवैज्ञानिक प्रभाव मनोविज्ञान और शिक्षा शास्त्र के तमाम अध्ययन स्पष्ट करते हैं कि हिंसा और अपमान बच्चों की सीखने की क्षमता को नष्ट कर देते हैं। डर के माहौल में बच्चा न तो प्रश्न पूछ पाता है और न ही प्रयोग कर पाता है। उसकी एकाग्रता और निर्णय क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और वह धीरे-धीरे हीनभावना का शिकार हो जाता है। यह कुंठा उसके पूरे जीवन और व्यक्तित्व पर छाया की तरह मंडराती रहती है। ऐसे बच्चे बड़े होकर भी जोखिम लेने से डरते हैं और आत्मविश्वास के अभाव में पिछड़ जाते हैं। हर बच्चा है विशिष्ट हमारी सबसे बड़ी भूल यह है कि हम हर बच्चे को एक ही मापदंड से आंकना चाहते हैं। सच्चाई यह है कि हर बच्चा अपनी विशेष क्षमता के साथ जन्म लेता है; कोई गणित में माहिर है तो कोई कला, खेल या संगीत में। नई शिक्षा नीति-2020 ने बहुआयामी और रुचि आधारित शिक्षा की वकालत की है, लेकिन जमीनी स्तर पर अभी भी कोचिंग संस्कृति और बोर्ड परीक्षाओं का भय हावी है। यह समझना अनिवार्य है कि कई बच्चे आनुवंशिक या परिस्थितियों के कारण सीखने में कठिनाई (जैसे डिस्लेक्सिया या मानसिक तनाव) महसूस कर सकते हैं। ऐसे बच्चों को दंड की नहीं, बल्कि धैर्य और सहारे की आवश्यकता होती है। परिवर्तन की राह हाल ही में प्लेटिनम वैली इंटरनेशनल स्कूल में एनपीएससी से जुड़ी अनुभवी शिक्षाविद् डॉ. उषा राम और 'द मान स्कूल' के प्रिंसिपल श्रीनिवासन श्रीराम के साथ नई शिक्षा नीति पर सार्थक चर्चा हुई। सर्वसम्मति यही रही कि शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और मानवीय मूल्यों का संवर्धन होना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी बार-बार 'परीक्षा पे चर्चा' के माध्यम से तनाव कम करने की अपील करते रहे हैं। असली परिवर्तन तब होगा जब अभिभावक समझेंगे कि उनका बच्चा उनकी प्रतिष्ठा का साधन नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्तित्व है। स्कूल प्रशासन को 'दंड की संस्कृति' छोड़कर सहयोग और परामर्श की व्यवस्था विकसित करनी होगी। आज जरूरत शिक्षा को फिर से मानवीय बनाने की है, जहाँ स्नेह अनुशासन का आधार हो और संवाद दंड का विकल्प। मासूमों को डर नहीं, हौसले का संबल चाहिए; डांट नहीं, दिशा चाहिए; और हिंसा नहीं, विश्वास चाहिए। तभी शिक्षा सचमुच जीवन देने वाली बन सकेगी, जीवन लेने वाली नहीं।

अवश्य पधारिये । श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः धर्मलाभ उठाइये ।।

पदमपुरा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

दिनांक 18 से 22 फरवरी 2026

भव्य मंगल प्रवेश

गणिनी आर्यिका 105 श्री स्वस्तिभूषण माताजी ससंघ

रविवार, 1 फरवरी 2026 • दोपहर 3.15 बजे

पद्मप्रभ मोक्ष कल्याणक महोत्सव

गुरूवार, 5 फरवरी 2026

श्री 1008 पद्मप्रभ भगवान के मोक्ष कल्याणक के पावन अवसर पर मिति फाल्गुण कृष्णा चतुर्थी संवत् 2082 तदानुसार गुरूवार, 5 फरवरी 2026 को भव्य पदमप्रभ मोक्ष कल्याणक महामहोत्सव एवं पंच कल्याणक के पात्रों के निर्धारण का भव्य आयोजन होगा । सभी साधर्मी बन्धुओं से अनुरोध है कि सभी मांगलिक कार्यक्रमों में सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पधार कर, धर्मलाभ प्राप्त करें एवं कार्यक्रम को भव्य बनावें।

'पधारो पदमपुरा बाड़ा'

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा (बाड़ा) जयपुर में
वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य परम पूज्य आचार्य 108 श्री वर्धमानसागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में एवं
गणिनी आर्यिका 105 श्री स्वस्तिभूषण माताजी ससंघ के पावन प्रेरणा से
नवनिर्मित खड्गासन चौबीसी का भव्यातिभव्य श्री मज्जिनेन्द्र पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव
दिनांक 18 से 22 फरवरी 2026 को आयोजित होने जा रहा है।

मांगलिक कार्यक्रम

रविवार, 1 फरवरी 2026

गणिनी आर्यिका 105 श्री स्वस्तिभूषण माताजी ससंघ का
पदमपुरा में भव्य मंगल प्रवेश दोपहर 3.15 बजे
(शिवदासपुरा मार्ग से)
तत्पश्चात् सायंकालीन वात्सल्य भोज

गुरूवार, 5 फरवरी 2026

प्रातः 7.30 बजे	:	नित्य नियम अभिषेक
प्रातः 8.15 बजे	:	निर्वाण पूजन एवं निर्वाण लाडू
प्रातः 10.15 बजे	:	भव्य खड्गासन प्रतिमाजी के पंचामृत महामस्तकाभिषेक

निवेदक

प्रबंध समिति श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा, जयपुर

प्रबन्ध समिति – संरक्षक : श्री भागचन्द टोंग्या, निवाई – 9214078900, न्यायाधीश नगेन्द्र कुमार जैन काला – 9829061053, श्री राजेन्द्र के. गोधा – 9351251493, श्री रूपचन्द कटारिया, दिल्ली – 9871205252, श्री ज्ञानचन्द झांझरी – 9829013094 • अध्यक्ष : श्री सुधीर कुमार जैन, दौसा – 9414050432 • उपाध्यक्ष : श्री अनिल कुमार जैन – 9414337555, श्री महावीर कुमार अजमेरा कोटखावदा – 9929174404, श्री नेमीचन्द गंगवाल, निवाई – 9414866946, श्री सुभाष जैन पाटनी – 9829213514, श्री सुरेन्द्र कुमार जैन पाण्ड्या – 9829063341, श्री सुरेशचन्द काला, चन्दलाई – 8560912735 • मानद मंत्री : श्री हेमन्त सोगानी – 9829064506 • संयुक्त मंत्री : श्री जितेन्द्र मोहन जैन एडवोकेट – 9828017429 • कोषाध्यक्ष : श्री राजकुमार कोठ्यारी – 9414048432 • सदस्य : श्री चौथमल भौंसा बड़जात्या, चाकसू – 9460554694, श्री गोविन्द जैन – 9828081188, श्री ज्ञानचन्द जैन, सोगानी – 9829092744, श्री हरिश चन्द्र जैन, पाडूका – 9414075449, श्री कैलाश चन्द जैन, सोगानी – 9829062289, श्री महावीर कुमार पाटनी – 9414047344, श्री महेन्द्र कुमार जैन, अनोपड़ा – 9314501075, श्री महावीर प्रसाद पहाड़िया – 9829475081, श्री नगेन्द्र कुमार जैन, कानोता – 9414251259, श्री नरेन्द्र कुमार जैन पाण्ड्या – 9414078372, श्री प्रेम चन्द छाबड़ा – 9414052412, श्री राज कुमार सेठी – 9829098098, श्री राजेश जैन गंगवाल – 9314503273, श्री संतोष कुमार जैन रांवका – 9351185559, डॉ. विमल कुमार जैन – 9414460694, श्री योगेश टोडरका – 9414771158

सदस्य साधारण सभा – श्री अरूण जैन बैनाड़ा, लालसोट – 9414053435, श्रीमती आशा देवी जैन – 9300784201, श्री अशोक कुमार छाबड़ा सी.ए. – 9413678383, श्री अशोक कुमार कासलीवाल – 9351622889, श्री अशोक कुमार कटारिया – 9414029202, श्री अशोक कुमार पाटनी – 9829097066, श्री भागचन्द अजमेरा – 9610954051, श्री भाग चन्द जैन, सिकन्दरा – 9982067009, श्री दुलीचन्द विनायक्या – 9436003013, श्री धनु कुमार जैन – 9530399413, श्री जे. के. जैन – 9828017429, श्री कैलाश चन्द झांझरी – 9928010433, श्री करूण कुमार जैन अनोपड़ा, पदमपुरा – 9829621118, श्री महेन्द्र कुमार पाटनी – 9314651338, श्री महेश काला – 9829220151, श्री मुकेश जैन पुत्र श्री श्याम सुन्दर जैन – 9829010144, श्री मुकेश कुमार जैन एडवोकेट, अजमेर – 9828100123, श्री नाभि कुमार जैन – 9810191916, श्री प्रदीप कुमार जैन – 9829051671, श्री प्रकाश चन्द जैन – 9351386010, श्री प्रकाशचन्द सोनी – 9414558485, श्री राजेन्द्र बिलाला, मोहनबाड़ी – 9414073015, श्री राकेश जैन – 9829484888, श्री राजेश कुमार सेठी – 9414077525, श्री राजेन्द्र कुमार जैन, खैरवाल, दौसा – 8562840715, श्री सन्तोष कुमार सेठी, कलकत्ता – 9831076982, श्रीमती सविता जैन – 04428331704, डॉ. शरद गोधा – 9413342591, डॉ. शीतलचन्द जैन – 9414783707, श्री सत्यनारायण जैनखवाल – 9828459248, श्री सुबोध कुमार जैन – 9414272466, श्री सुरेश चन्द गंगवाल, निमोडिया – 9829695125, श्री सुरेश चन्द सबलावत – 9828111101, श्री सुनिल जैन पोल्याका "बब्बल" – 9829054582, श्री सुनिल जैन राजू – 9829050369

महोत्सव कार्यालय
छतरीवाला संभाग, भट्टारक जी की नसियां, जयपुर
मो. : 94140 48432, 98290 64506

पदमपुरा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव समिति

(अन्तर्गत श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा जयपुर, राजस्थान)

क्षेत्रीय कार्यालय
बाड़ा पदमपुरा, टोंक रोड, जयपुर
मो. : 90579 03365

चार्टर्ड अकाउंटेंट प्रितेश वगेरिया बने फेडरेशन ऑफ हूमड़ जैन समाज (युवा वर्ग) के राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष

उदयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगंबर जैन दशा हूमड़ जैन समाज संस्थान, उदयपुर के मंत्री और विख्यात चार्टर्ड अकाउंटेंट प्रितेश वगेरिया को एक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपते हुए 'फेडरेशन ऑफ हूमड़ जैन समाज' (युवा वर्ग) का राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष मनोनीत किया गया है। राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा उनका मनोनयन निर्विरोध संपन्न हुआ, जिससे समाज में हर्ष की लहर है।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं वगेरिया

समाज के महामंत्री पुष्पेंद्र धन्नावत ने बताया कि प्रितेश वगेरिया पेशे से एक सफल सनदी लेखाकार (चार्टर्ड अकाउंटेंट) होने के साथ-साथ कुशल वित्तीय सलाहकार भी हैं। वे एक प्रखर वक्ता और प्रभावशाली मंच संचालक के रूप में भी अपनी पहचान बना चुके हैं। अब तक वे विभिन्न सामाजिक और धार्मिक मंचों पर 140 से अधिक सफल कार्यक्रमों का संचालन कर चुके हैं। उनकी ऊर्जा और संगठनात्मक क्षमता को देखते हुए ही उन्हें यह प्रादेशिक जिम्मेदारी सौंपी गई है।

विभिन्न संस्थाओं में अनुभव का लंबा सफर

प्रितेश वगेरिया का सामाजिक सेवा का अनुभव अत्यंत व्यापक है। वे पूर्व में कई प्रतिष्ठित संस्थाओं में महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं, जिनमें मुख्य हैं:

जैन सोशल ग्रुप प्लेटिनम: पूर्व अध्यक्ष
महावीर जैन जागृति परिषद: मंडल सदस्य
आगम युवा परिषद: संस्थापक अध्यक्ष
बाहुबली युवा मंच: पूर्व कोषाध्यक्ष
श्री मेवाड़ जैन युवा संस्थान: उपाध्यक्ष
अखिल भारतीय दिगंबर युवा परिषद: सलाहकार
नमो जीनानम: राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
जैन राजनैतिक चेतना मंच: कार्यकारिणी सदस्य

इसके अतिरिक्त, वे सुनील सागर युवा मंच के प्रवक्ता और अखिल भारतीय सुप्रकाश ज्योति मंच के राष्ट्रीय प्रवक्ता जैसे पदों पर भी आसीन रहे हैं।

समाज ने दी शुभकामनाएं

संस्थान के अध्यक्ष रमेश शाह ने वगेरिया की नियुक्ति पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि उनके जैसे ऊर्जावान और धर्मनिष्ठ युवा के नेतृत्व में राजस्थान में हूमड़ जैन समाज का युवा वर्ग नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेगा। श्री दिगंबर जैन दशा हूमड़ समाज संस्थान, उदयपुर के समस्त पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने वगेरिया को इस नई उपलब्धि पर हार्दिक बधाई और भविष्य के लिए शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

मंडी-बड़ौत में भावलिंगी संत की अमृत वर्षा

अहिंसा और संयम ही जीवन का सार

बड़ौत (बागपत). शाबाश इंडिया

उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के मंडी-बड़ौत क्षेत्र में शुक्रवार, 30 जनवरी को भावलिंगी संत के सानिध्य में भव्य 'मंगल प्रवचन' का आयोजन किया गया। इस आध्यात्मिक सभा में संत ने जैन धर्म के गूढ़ रहस्यों को सरल भाषा में समझाते हुए उपस्थित जनसमूह को आत्म-कल्याण और सदाचार के मार्ग पर चलने का संकल्प दिलाया।

धर्म और आत्मा का साक्षात्कार

अपने प्रवचन के दौरान पूज्य संत ने धर्म, आत्मा, कर्म और साधना जैसे मौलिक विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जैन दर्शन केवल एक धर्म नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक वैज्ञानिक पद्धति है। प्राचीन भारतीय परंपरा का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि प्रवचन का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति को अपनी आंतरिक शक्ति से परिचित कराना और उसे नैतिक मूल्यों से जोड़ना है।

पंच महाव्रतों की प्रासंगिकता

संत ने जीवन के उच्च आदर्शों पर बल देते हुए बताया कि आत्मिक विकास के लिए 'पंच महाव्रतों' का पालन अनिवार्य है:

अहिंसा: केवल शरीर से नहीं, बल्कि मन और वचन से भी किसी जीव को कष्ट न पहुँचाना।

सत्य और अस्तेय: सत्य का मार्ग अपनाना और बिना अनुमति किसी की वस्तु ग्रहण न करना।

ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह: इंद्रियों पर नियंत्रण और अनावश्यक वस्तुओं के संग्रह का त्याग।

उन्होंने स्पष्ट किया कि मोक्ष की ओर बढ़ने के लिए नियमित ध्यान और समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण

रखना आवश्यक है।

युवा पीढ़ी को संदेश: संयम ही शक्ति

विशेष रूप से युवा पीढ़ी को संबोधित करते हुए संत ने आग्रह किया कि वे आधुनिकता की चकाचौंध के बीच अपने संस्कारों को न भूलें। उन्होंने दैनिक जीवन में संयम, करुणा और आत्म-अनुशासन को अपनाने की प्रेरणा दी। संत के अनुसार, यदि युवा धर्म के प्रति जागरूक होंगे, तभी समाज में शांति और सहिष्णुता का विस्तार होगा।

सामाजिक और आध्यात्मिक प्रभाव

इस आयोजन ने न केवल श्रद्धालुओं को धार्मिक चिंतन के लिए प्रेरित किया, बल्कि सामुदायिक सद्भाव और नैतिकता को भी बढ़ावा दिया। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित लोगों ने अपने जीवन से व्यसनों का त्याग करने और अहिंसा के मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। यह मंगल प्रवचन जैन परंपरा के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण साधना कार्यक्रम सिद्ध हुआ, जिसने जन-जन के मानस पटल पर गहरी छाप छोड़ी।

पंखों की उड़ान और आर्द्रभूमियों की पुकार के साथ संरक्षण का उत्सव शुरू

शिक्षा, संवेदना और रचनात्मकता से सजा पहला दिन

जयपुर. कासं। धरती की आर्द्रभूमियों को बचाने और आसमान में परिंदों की चहचहाहट को फिर से सजीव करने के संकल्प के साथ जयपुर बर्ड फेस्टिवल-2026 का भव्य शुभारंभ शनिवार को कानोता कैंप रिजॉर्ट, जामडोली (जयपुर) में हुआ। इस दो दिवसीय राज्य स्तरीय आयोजन ने पहले ही दिन प्रकृति प्रेम, संरक्षण चेतना और रचनात्मक अभिव्यक्ति के रंग बिखेर दिए। ग्रीन पीपल सोसायटी (जयपुर चैप्टर) द्वारा राज्य सरकार के वन विभाग एवं डब्ल्यूडब्ल्यूएफ इंडिया के सहयोग से आयोजित इस फेस्टिवल का उद्घाटन संरक्षण विशेषज्ञों, शिक्षाविदों, विद्यार्थियों और प्रकृति प्रेमियों की गरिमामय उपस्थिति में हुआ। ग्रीन पीपल सोसायटी के उपाध्यक्ष एवं जयपुर बर्ड फेस्टिवल के संयोजक विक्रम सिंह ने बताया कि यह आयोजन पिछले 12 वर्षों से राष्ट्रीय पहचान बना चुके उदयपुर बर्ड फेस्टिवल से प्रेरित है और जयपुर में यह पहल प्रकृति संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण होगी। फेस्टिवल के पहले दिन आयोजित मुख्य सत्र में विद्यार्थियों के लिए नेचर क्विज, पेंटिंग प्रतियोगिता, बर्ड फोटोग्राफी, बटरफ्लाई एवं पेंटिंग प्रदर्शनी, फिलैटली प्रदर्शनी, रैप्टर्स प्रदर्शनी तथा अत्याधुनिक वीआर एक्सपीरियंस आकर्षण का केंद्र रहे।

ग्रामीण आत्मनिर्भरता की नई मशाल

18 वर्षों से युवाओं और महिलाओं को संबल दे रही 'अनमोल' संस्था

रावतसर (नरेश सिगची). शाबाश इंडिया

ग्रामीण राजस्थान में शिक्षा, कौशल विकास और स्वावलंबन की अलख जगा रही 'अनमोल मल्टीपर्पज एक्टीविटीज एण्ड सोशल सर्विसेज सोसाइटी' पिछले 18 वर्षों से सेवा का पर्याय बनी हुई है। रावतसर सहित हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिलों में यह संस्था ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने की दिशा में एक सशक्त माध्यम बनकर उभरी है।

कौशल विकास से स्वरोजगार तक का सफर

संस्था के निदेशक लाल सिंह ने बताया कि अनमोल संस्था का मूल ध्येय ग्रामीण प्रतिभाओं को तराशना है। अब तक हजारों युवाओं और महिलाओं को सिलाई-कटाई, सौंदर्य प्रसाधन (ब्यूटी पार्लर), कंप्यूटर शिक्षा, मधुमक्खी पालन और जैविक खाद निर्माण जैसे व्यावसायिक क्षेत्रों में निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जा चुका है। इन कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य स्थानीय स्तर पर ही सम्मानजनक रोजगार के अवसर सृजित करना है।

महिला सशक्तिकरण: आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम

संस्था ने हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर में आधुनिक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए हैं। यहाँ 18 से 35 वर्ष की महिलाओं को चार महीने का विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है।

तकनीकी ज्ञान: अब तक 240 से अधिक महिलाओं को सिलाई-कटाई और सौंदर्य कला में निपुण बनाया गया है।

जीवन कौशल: प्रशिक्षण के दौरान केवल तकनीकी बारीकियां ही नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, संचार क्षमता, नेतृत्व और सामाजिक समानता जैसे विषयों पर भी मार्गदर्शन दिया जाता है।

डिजिटल साक्षरता और तकनीकी शिक्षा

वर्तमान युग की आवश्यकता को देखते हुए संस्था राजस्थान ज्ञान निगम लिमिटेड के माध्यम से कंप्यूटर साक्षरता अभियान (आरएससीआईटी) चला रही है। इस पहल ने ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी शिक्षा की पहुँच को सुगम बनाया है, जिससे सैकड़ों बेरोजगार युवक-युवतियां आज विभिन्न क्षेत्रों में कंप्यूटर आधारित रोजगार प्राप्त कर रहे हैं।

मधुमक्खी पालन: किसानों की आय बढ़ाने का नवाचार

भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग के सहयोग से संचालित 'अनमोल मधुमक्खी पालन क्लस्टर' ग्रामीण आजीविका का नया आधार बना है। इस योजना के अंतर्गत रावतसर और आसपास के क्षेत्रों के 250 से अधिक किसानों को मधुमक्खी पालन का वैज्ञानिक प्रशिक्षण दिया गया है। इससे न केवल उनकी आय में वृद्धि हुई है, बल्कि कृषि क्षेत्र में विविधीकरण को भी बढ़ावा मिला है।

भविष्य की योजनाएं

संस्था के निदेशक लाल सिंह का कहना है कि उनकी योजना भविष्य में इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विस्तार और अधिक दूरस्थ गांवों तक करने की है। अनमोल संस्था का यह निरंतर प्रयास आज राजस्थान में 'रोजगार की नई रोशनी' के रूप में पहचाना जा रहा है, जो ग्रामीण भारत के विकास की नींव को और अधिक सुदृढ़ कर रहा है।

वरिष्ठ न्यूरो फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. धीरेंद्र भटनागर 'राष्ट्रीय गौरव सम्मान' से अलंकृत

जयपुर. शाबाश इंडिया

गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर चिकित्सा सेवा, मानव कल्याण और निस्वार्थ सामाजिक योगदान के लिए श्री गोपालपुरा बाईपास निवासी वरिष्ठ न्यूरो फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. धीरेंद्र भटनागर को प्रतिष्ठित 'राष्ट्रीय गौरव सम्मान 2026' प्रदान किया गया। राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित एक भव्य समारोह में समाज के विभिन्न क्षेत्रों की प्रमुख विभूतियों ने उन्हें इस सम्मान से नवाजा।

विशिष्ट अतिथियों द्वारा सम्मान

समारोह में डॉ. भटनागर को स्मृति चिन्ह और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर न्यायमूर्ति एन.के. जैन, पूर्व भारतीय पुलिस सेवा अधिकारी अनिल जैन, ग्रुप कैप्टन (सेवानिवृत्त) आर.सी. त्रिपाठी, कैप्टन (सेवानिवृत्त) सुखराम यादव, पुलिस निरीक्षक हरेंद्र सिंह, लेफ्टिनेंट कर्नल शीतलकृष्ण गायकवाड़ और सेवानिवृत्त सेना अधिकारी सी.के. सक्सेना सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

सेवा और संस्कारों का संगम

डॉ. भटनागर का जीवन बचपन से ही आर्य समाज के आदर्शों, आध्यात्मिक मूल्यों और सामाजिक सेवा के प्रति समर्पित रहा है। उन्होंने अपने जीवन के लगभग 20 महत्वपूर्ण वर्ष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को दिए, जहाँ सेवा, अनुशासन और राष्ट्र निर्माण के संस्कार उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बने। 75 वर्ष की आयु में भी वे उसी ऊर्जा और समर्पण के साथ रोगियों के उपचार में संलग्न हैं।

चिकित्सा क्षेत्र में पाँच दशकों का योगदान

वर्ष 1972 में न्यूरो फिजियोथेरेपी (तंत्रिका भौतिक चिकित्सा) के क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करने के बाद से डॉ. भटनागर निरंतर पीड़ित मानवता की सेवा कर रहे हैं। चिकित्सा को केवल व्यवसाय न मानकर उन्होंने इसे सेवा का माध्यम बनाया है।

निःशुल्क सेवा: उन्होंने राजस्थान सहित विभिन्न क्षेत्रों में वर्षों तक निर्धन और जरूरतमंद मरीजों को निःशुल्क उपचार प्रदान कर राहत पहुँचाई है।

विशेषज्ञता: पक्षाघात (पैरालिसिस) और तंत्रिका तंत्र से जुड़ी जटिल बीमारियों के उपचार में उनकी दक्षता ने हजारों मरीजों को नया जीवन दिया है।

प्रेरणादायी व्यक्तित्व

डॉ. धीरेंद्र भटनागर का जीवन युवा चिकित्सकों के लिए एक मिसाल है। समाज के प्रति उनकी कर्तव्यनिष्ठा और सेवा भावना ही उन्हें इस राष्ट्रीय सम्मान का वास्तविक हकदार बनाती है। समारोह में उपस्थित वक्ताओं ने उनके स्वस्थ और दीर्घायु जीवन की कामना की ताकि उनका मार्गदर्शन समाज को मिलता रहे।

भीतर की ऊर्जा को पहचानें और सही दिशा में लगाएंः अर्जुनराम मेघवाल

(शरद जैन / जगदीश यायावर)

लाडनूं. शाबाश इंडिया। भारत सरकार के विधि एवं न्याय मंत्री एवं जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के कुलाधिपति अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर अपार ऊर्जा होती है, आवश्यकता केवल उसे सही दिशा में उपयोग करने की है। वे यहां जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय में आयोजित उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने विद्यार्थियों से निरंतर सीखते रहने का आह्वान करते हुए विभिन्न आयु वर्गों में सीखने की प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला। मेघवाल ने कहा कि सीखने की प्रक्रिया घर से प्रारंभ होकर विश्वविद्यालय तक पहुँचती है और जीवन भर चलती रहती है। उन्होंने बहु-विषयक (मल्टी-डिसिप्लिन) शिक्षा को अपनाने पर बल देते हुए कहा कि खेलों से शरीर स्वस्थ रहता है, संगीत से तनाव कम होता है और गणित से मस्तिष्क की उत्तम कसरत होती है। केंद्रीय मंत्री ने संस्कारों के महत्व पर भी विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि किशोरावस्था, विशेषकर 12 से 17 वर्ष की आयु में जो संस्कार व्यक्ति ग्रहण करता है, वे जीवन भर उसके व्यवहार और चरित्र को प्रभावित करते हैं। अच्छे संस्कार जीवन को सकारात्मक दिशा देते हैं, जबकि बुरे संस्कार व्यक्ति को नकारात्मक प्रवृत्तियों की ओर ले जाते हैं। मेघवाल ने जैन विश्वभारती संस्थान की प्रशंसा करते हुए कहा कि यहां नैतिकता और जीवन मूल्यों की शिक्षा दी जाती है। उन्होंने यहां अध्ययनरत विद्यार्थियों को सौभाग्यशाली बताते हुए कहा कि आचार्य तुलसी की शिक्षा-दृष्टि आज भी इस परिसर में ऊर्जा के रूप में अनुभव की जा सकती है। उन्होंने विकसित भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि इस लक्ष्य की प्राप्ति में युवाओं का श्रम और समर्पण ही निर्णायक होगा। उन्होंने 21वीं शताब्दी को एशिया, विशेष रूप से भारत के नेतृत्व की शताब्दी बताया और देश की उपलब्धियों एवं क्षमताओं का उल्लेख किया। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने विकसित भारत विषय पर लिखी गई अपनी कविता हम हैं भारत के लोग का सस्वर पाठ भी किया।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

बाकलीवाल परिवार की गोद भराई एवं सम्मान समारोह सम्पन्न

ब्यावर. शाबाश इंडिया

परम पूज्य आचार्य श्री 108 कुन्थुसागर जी महाराज एवं णमोकार तीर्थ के प्रणेता सरस्वतीाचार्य श्री 108 देवेन्द्र जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से णमोकार तीर्थ, नासिक में 6 से 13 फरवरी 2026 तक आयोजित होने वाले सप्तऋषि मंदिर पंचकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत ब्यावर निवासी बाकलीवाल परिवार को संघ सेवाधिपति, माता-पिता, सौधर्म इन्द्र एवं कुबेर बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी क्रम में श्री दिगंबर जैन पंचायती नसियां जी में राजेश जी-रेखा जी जैन बाकलीवाल की गोद भराई एवं सम्मान समारोह श्रद्धा, भक्ति एवं गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम पूज्य मुनि श्री 108 अरहसागर जी महाराज एवं पूज्य मुनि श्री 108 सुहितसागर जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित किया गया। समारोह के दौरान चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन, पाद प्रक्षालन तथा शास्त्र भेंट जैसे धार्मिक अनुष्ठान विधिवत सम्पन्न किए गए। कार्यक्रम में समाजजनों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। इस अवसर पर श्री दिगंबर जैन पंचायत के अध्यक्ष अशोक जैन काला, सचिव विजय जैन फागीवाल सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

भीलवाड़ा में 2 फरवरी से प्रवाहित होगी भागवत ज्ञान गंगा

संत दिग्विजय रामजी महाराज करेंगे कथा वाचन

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। वस्त्रनगरी भीलवाड़ा में आगामी 2 से 8 फरवरी तक श्रीमद् भागवत कथा रूपी पावन धर्म गंगा प्रवाहित होने जा रही है। रोडवेज बस स्टैंड के समीप स्थित अग्रवाल उत्सव भवन में आयोजित होने वाले इस भव्य धार्मिक महोत्सव में चित्तौड़गढ़ के प्रसिद्ध रामस्नेही संत श्री दिग्विजय रामजी महाराज अपनी ओजस्वी वाणी से श्रद्धालुओं को निहाल करेंगे।

कलश यात्रा से होगा मंगल आगाज

आयोजन समिति और स्व. श्रीमती गीतादेवी तोषनीवाल चैरिटेबल ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने शनिवार को पत्रकार वार्ता में बताया कि सात दिवसीय इस महोत्सव का शुभारंभ 2 फरवरी को सुबह 10:15 बजे भव्य कलश शोभायात्रा के साथ होगा। यह यात्रा माणिक्यनगर रामद्वारा से प्रारंभ होकर कथा स्थल अग्रवाल उत्सव भवन पहुंचेगी। कथा का समय प्रतिदिन दोपहर 2 बजे से शाम 6 बजे तक निर्धारित किया गया है।

पंच कुण्डीय विष्णु महायज्ञ और सुंदरकांड

कथा परिसर में ही एक विशाल यज्ञ मंडप तैयार किया गया है, जहाँ प्रतिदिन सुबह 8 से दोपहर 12:30 बजे तक 'पंच कुण्डीय श्री विष्णु महायज्ञ' का आयोजन होगा। यह यज्ञ पंडित गौरीशंकर शास्त्री के सानिध्य में लोक कल्याण की कामना हेतु संपन्न होगा। इसके अतिरिक्त, 7 फरवरी को शाम 7 बजे से राष्ट्रीय संत डॉ. मिथिलेश नागर (नैनौराधाम) के मुखारबिंद से संगीतमय सुंदरकांड पाठ का विशेष आयोजन होगा।

नंद महोत्सव और तुलसी विवाह के विशेष आकर्षण

महोत्सव के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक प्रसंगों को जीवंत किया जाएगा:
5 फरवरी: रात्रि 8 बजे भव्य 'नंद महोत्सव' और रासलीला का मंचन।
7 फरवरी: मंगलमय 'तुलसी विवाहोत्सव' का आयोजन।
8 फरवरी: सुदामा चरित्र और परीक्षित मोक्ष के प्रसंग के साथ कथा की पूर्णाहुति।

व्यापक तैयारियां और जन-सहयोग

ट्रस्ट के पदाधिकारियों के अनुसार, हजारों भक्तों के बैठने के लिए विशाल डोमयुक्त पांडाल तैयार किया गया है। आयोजन को सुचारू बनाने के लिए विभिन्न समितियों का गठन किया गया है। माहेश्वरी समाज सहित शहर के विभिन्न सामाजिक और धार्मिक संगठनों को इस महोत्सव के लिए आमंत्रित किया गया है। पत्रकार वार्ता के दौरान एडवोकेट केदार जागेटिया, रामस्वरूप तोषनीवाल और दीपक तोषनीवाल सहित कई पदाधिकारी उपस्थित रहे।

अवधपुरी के श्री पद्मप्रभु जिनालय में वास्तु विधान संपन्न

आगरा. शाबाश इंडिया। अवधपुरी स्थित श्री पद्मप्रभु जिनालय में शनिवार को वेदी शिलान्यास समारोह के पावन उपलक्ष्य में 'श्री वास्तु विधान' का आयोजन अपार श्रद्धा और भक्ति भाव के साथ संपन्न हुआ। इस मांगलिक अवसर पर ध्यान गुरु उपाध्याय श्री विहसंतसागर जी महाराज ससंघ का मंगल सानिध्य प्राप्त हुआ, जिससे संपूर्ण परिसर आध्यात्मिक ऊर्जा से सराबोर हो गया।

धार्मिक अनुष्ठान और भक्ति का संगम

विधान का शुभारंभ पंडित विवेक जैन शास्त्री के कुशल निर्देशन में मंत्रोच्चार के साथ हुआ। बड़ी संख्या में उपस्थित समाजजनों ने श्रीजी की आराधना कर धर्म लाभ अर्जित किया। विधान के पश्चात सायंकाल में विशेष गुरुभक्ति का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने भजनों के माध्यम से अपनी आस्था प्रकट की।

वेदी शिलान्यास का भव्य आयोजन

मीडिया प्रभारी शुभम जैन ने जानकारी दी कि उपाध्याय श्री के सानिध्य में वेदी शिलान्यास समारोह रविवार, 1 फरवरी को प्रातः 8:00 बजे आयोजित किया जाएगा। इस ऐतिहासिक पल का साक्षी बनने के लिए सकल जैन समाज, अवधपुरी ने सभी धर्मप्रेमियों से अधिक से अधिक संख्या में पधारने की अपील की है। इस अवसर पर इंद्रप्रकाश जैन, प्रवीन जैन, अजय जैन 'मास्टर', जितेंद्र जैन, करुणा जैन और पुष्पा जैन सहित समस्त अवधपुरी जैन समाज के प्रतिनिधि और महिला मंडल की सदस्याएं बड़ी संख्या में उपस्थित रहीं। इस आयोजन से क्षेत्र में आध्यात्मिक चेतना और धार्मिक संस्कारों के सुदृढ़ होने की उम्मीद है।

महावीर इंटरनेशनल ने विद्यालय में वितरित किए जीवन रक्षक औषधि किट

गढ़ी परतापुर. शाबाश इंडिया

'हृदय सुरक्षा परियोजना' के अंतर्गत महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, झड़स में जीवन रक्षक औषधि किट वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाचार्य मोहनलाल कतिजा ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में परिषद सदस्य अजीत कोठिया और विशिष्ट अतिथि अलकेश कुमार जैन उपस्थित रहे।

हृदय घात में संजीवनी है यह किट

संस्था के अंतरराष्ट्रीय निदेशक अजीत कोठिया ने बताया कि हृदय घात (हार्ट अटैक) की स्थिति में यह किट रोगी को चिकित्सालय पहुँचने तक सुरक्षा प्रदान करती है। इसमें सम्मिलित तीन औषधियाँ—एस्पिरिन (150 मिलीग्राम), सोर्बिट्रेट (10 मिलीग्राम) और अटॉर्वास्टेटिन (80 मिलीग्राम)—आपातकाल में प्राण रक्षक सिद्ध होती हैं। विद्यालय के शिक्षकों को इन औषधियों के उपयोग और प्राथमिक चिकित्सा के महत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

शिक्षकों ने सराही पहल

समारोह के दौरान गुरुजनों को 15 जीवन रक्षक किट भेंट किए गए। प्रधानाचार्य सहित समस्त शिक्षक परिवार ने महावीर इंटरनेशनल की इस स्वास्थ्य पहल का स्वागत करते हुए इसे पीड़ित मानवता की सेवा में एक अनुकरणीय कदम बताया। कार्यक्रम का संचालन अजीत कोठिया ने किया और आभार सुभाष चंद्र श्रीमाली ने व्यक्त किया।

उपाध्याय विकसंत सागर महाराज ससंघ का श्री पदम प्रभु दिगंबर जैन मंदिर, बापू नगर में मंगल प्रवेश

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

उपाध्याय विकसंत सागर महाराज ससंघ का श्री वासुपूज्य दिगंबर जैन मंदिर, बिलिया से विहार करते हुए शनिवार सायंकाल श्री पदम प्रभु दिगंबर जैन मंदिर, बापू नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। ट्रस्ट मंत्री पूनमचंद सेठी ने बताया कि ढोल-नगाड़ों की गूंज के साथ पुरुष, महिलाएं एवं युवा जयकारे लगाते हुए मुनि ससंघ के साथ चल रहे थे। मंदिर पहुंचने पर महिलाओं ने सिर पर मंगल कलश धारण कर अगवानी की तथा श्रावक-श्राविकाओं ने मुनि ससंघ का पाद प्रक्षालन किया। इसके पश्चात मुनि ससंघ ने मंदिर में जिनेंद्र देव के दर्शन किए। इस अवसर पर उपाध्याय विकसंत सागर महाराज ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि पुरुषार्थ के संतुलित पालन से ही मोक्ष मार्ग प्रशस्त होता है। उन्होंने कहा कि निष्काम कर्म, ज्ञान एवं आत्मज्ञान के माध्यम से सांसारिक बंधनों से विरक्ति प्राप्त करना ही मोक्ष की ओर अग्रसर होने का सच्चा पुरुषार्थ है। ट्रस्ट अध्यक्ष लक्ष्मीकांत जैन ने कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए बताया कि प्रातः 7:15 बजे अभिषेक शांतिधारा, प्रातः 8:30 बजे मुनि प्रवचन तथा दोपहर 3:00 बजे स्वाध्याय आयोजित होगा।

शुभम शर्मा बने मिस्टर वर्धमान एवं आरूषि भारद्वाज बनी मिस वर्धमान

सीकर. शाबाश इंडिया। वर्धमान विद्या विहार में गुडलक एवं फेयरवेल पार्टी का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। संस्था के सचिव संजय संगही एवं अध्यक्ष दीपक संगही ने बताया कि कार्यक्रम दो चरणों में आयोजित हुआ। प्रथम चरण में कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों को बोर्ड परीक्षा 2026 के लिए शुभकामनाएं दी गईं। संस्था प्रधानाचार्या डॉ. मीनाक्षी भार्गव ने बताया कि

इस अवसर पर नितिशा वर्मा एवं आयुष व्यास को बेस्ट एकेडमिक सो फार पुरस्कार प्रदान किया गया, जबकि अभिनव जैन को प्रॉमिसिंग परफॉर्मर अवार्ड से सम्मानित किया गया। संस्था के उपाध्यक्ष आशीष जयपुरिया एवं सह सचिव रितेश रारा ने बताया कि कार्यक्रम के दूसरे चरण में फेयरवेल पार्टी का आयोजन किया गया। इसमें भव्या शर्मा, सना बेन्स एवं नेहा भार्गव को बेस्ट एकेडमिक सो फार अवार्ड प्रदान किया गया। वहीं दिव्यांशी जैन, प्रियां नारवानी एवं वैदिका जैन को मोस्ट डिसिप्लिंड स्टूडेंट पुरस्कार दिया गया। फेयरवेल पार्टी का मुख्य आकर्षण मिस्टर वर्धमान एवं मिस वर्धमान प्रतियोगिता रही। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान महावीर के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। प्रतियोगिता की निर्णायक डॉ. रश्मि सैनी ने शुभम शर्मा को मिस्टर वर्धमान एवं आरूषि भारद्वाज को मिस वर्धमान घोषित किया। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत की गई रंगारंग एवं आकर्षक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने आयोजन को चार चाँद लगा दिए। विद्यार्थियों ने कहा कि वे अपने शिक्षकों के सहयोग और मार्गदर्शन को कभी नहीं भूलेंगे तथा यहाँ सीखे गए शिष्टाचार सदैव उनके जीवन में मार्गदर्शक रहेंगे।

राजस्थान विश्वविद्यालय में जर्मन-हिंदी अनुवाद पर कार्यशाला

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान विश्वविद्यालय के यूरोपीय भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन विभाग तथा इंडो-जर्मन सोसाइटी, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में जर्मन-हिंदी अनुवाद विषय पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला संस्कृतियों के बीच सेतुः अंतरभाषिक रूपांतरण एवं सांस्कृतिक मध्यस्थता विषय पर आधारित रही। कार्यशाला का संचालन जर्मन भाषा के वरिष्ठ विद्वान, हैदराबाद स्थित अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर एवं कुलपति प्रो. वृद्धागिरी गणेशन ने किया। प्रो. गणेशन का स्वागत छात्र-छात्राओं की करतल ध्वनि के साथ इंडो-जर्मन सोसाइटी के डॉ. हेमंत अग्रवाल, डॉ. नमोकार जैन एवं हर्षिता द्वारा किया गया। यह कार्यशाला विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी रही, जो अनुवाद को रुचि अथवा करियर के रूप में अपनाना चाहते हैं। कार्यशाला में इंडो-जर्मन सोसाइटी के वरिष्ठ सदस्यों के साथ-साथ यूरोपीय भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन विभाग के विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता की।

आर्यिका शीतल मति माताजी की हुई समाधि

आज निकाली जाएगी अंतिम चकडोल यात्रा

निवाई. शाबाश इंडिया। वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज के पावन सानिध्य में नसियां जैन मंदिर स्थित संत निवास पर आर्यिका शीतल मति माताजी की संल्लेखना समाधि पूर्वक पूर्ण हुई। माताजी का शनिवार, 31 जनवरी को नौवां उपवास था। समाधि की सूचना मिलते ही दर्शनों के लिए श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। मीडिया प्रभारी सुनील भाणजा और विमल जौंला ने बताया कि माताजी ने नौ दिन पूर्व 'यम संल्लेखना' धारण की थी। इससे पूर्व उन्होंने दो उपवास किए और आहार में मात्र जल ग्रहण कर कठोर तपस्या की। आचार्य संघ के साधु-साध्वी प्रतिदिन उन्हें आध्यात्मिक संबोधन दे रहे थे। आचार्य वर्धमान सागर महाराज ने माताजी को संबोधित करते हुए कहा कि जिस प्रकार मंदिर के शिखर की शोभा कलशारोहण से होती है, उसी प्रकार साधु के जीवन में समाधि मरण धारण करना संयम का 'कलशारोहण' है। माताजी के पार्थिव देह की अंतिम चकडोल यात्रा रविवार, 1 फरवरी को निकाली जाएगी, जिसमें सकल जैन समाज के श्रद्धालु शामिल होकर उन्हें अपनी अंतिम विनयांजलि अर्पित करेंगे।

अथाईखेड़ा में रोटरी मेडिकल मिशन का शिविर संपन्न, 70 मरीजों का हुआ स्वास्थ्य परीक्षण

अशोकनगर. शाबाश इंडिया। रोटरी क्षेत्रीय चिकित्सा मिशन, शिवपुरी के अंतर्गत रोटरी परिवार एवं श्रीमंत माधव राव सिंधिया स्वास्थ्य सेवा मिशन के संयुक्त तत्वावधान में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र अथाईखेड़ा में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया।

चिकित्सा परामर्श और उपचार

शिविर का शुभारंभ मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अलका त्रिवेदी और भाजपा जिला मंत्री लखन यादव की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। डॉ. पंकज शुक्ला एवं उनकी चिकित्सा टीम ने 70 मरीजों के स्वास्थ्य की सघन जांच की और आवश्यकतानुसार उन्हें दवाइयाँ वितरित कीं। रोटरी क्लब की ओर से अध्यक्ष अजित कुमार जैन ने सक्रिय सहभागिता निभाई।

शिवपुरी में होगा विशेषज्ञ उपचार

इस परियोजना के अंतर्गत गंभीर बीमारियों से ग्रसित चिन्हित मरीजों को आगामी 21 से 28 मार्च 2026 तक शिवपुरी में आयोजित होने वाले विशेष चिकित्सा शिविर में भेजा जाएगा। वहां विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम द्वारा उनका निःशुल्क उपचार किया जाएगा। जिले के समस्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर यह परीक्षण अभियान 18 फरवरी तक निरंतर जारी रहेगा। रोटरी परिवार ने नागरिकों से अपील की है कि वे अपने आसपास के बीमार व्यक्तियों को इन शिविरों की जानकारी देकर लाभान्वित कराएं।

आने वाली महामारियाँ

भविष्य की चेतावनी, वर्तमान की ज़िम्मेदारी और अंतरराष्ट्रीय साज़िश का गहराता खतरा

आज यह विषय केवल स्वास्थ्य विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों या अंतरराष्ट्रीय संगठनों की बैठकों तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह प्रत्येक जागरूक नागरिक के लिए चिंता और आत्ममंथन का विषय बन चुका है। यह मान लेना अब भ्रम होगा कि आने वाली महामारियाँ केवल प्राकृतिक आपदाएँ होंगी। सच्चाई यह है कि प्रकृति का असंतुलन, मानव की असीमित लालसा, असंयमित जीवनशैली और वैश्विक सत्ता-संघर्ष—ये सभी मिलकर भविष्य की महामारियों की नींव तैयार कर चुके हैं। जिस गति से जंगलों का विनाश हो रहा है, नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, हवा विषैली बनती जा रही है और वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास छीने जा रहे हैं, उससे नए-नए वायरस और रोगजनक तत्व मनुष्य के अत्यंत समीप आ चुके हैं। जानवरों और मनुष्यों के बीच की प्राकृतिक दूरी समाप्त होने से जूनोटिक बीमारियाँ तेजी से फैल रही हैं। कोरोना महामारी ने यह सिद्ध कर दिया कि एक सूक्ष्म-सा वायरस भी कुछ ही समय में पूरी मानव सभ्यता को ठहराव की स्थिति में ला सकता है। इसके बावजूद यदि मानव यह सोचता है कि वही अंतिम महामारी थी, तो यह सबसे बड़ी भूल होगी। आने वाले समय में नए कोरोना-प्रकार, निपाह, एवियन फ्लू जैसी बीमारियाँ और भी विकराल रूप में सामने आ सकती हैं। इसके साथ-साथ एंटीबायोटिक-प्रतिरोधी बैक्टीरिया एक ऐसी अदृश्य महामारी बन चुके हैं, जिनके सामने आधुनिक चिकित्सा भी धीरे-धीरे असहाय होती जा रही है। जिस प्रकार दवाओं का अंधाधुंध उपयोग किया जा रहा है, उससे भविष्य में साधारण संक्रमण भी मृत्यु का कारण बन सकता है। जलवायु परिवर्तन ने बीमारियों की भौगोलिक सीमाएँ तोड़ दी हैं—डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया अब उन देशों में भी फैल रहे हैं, जहाँ पहले इनका अस्तित्व नहीं था। इसका स्पष्ट अर्थ है कि यह संकट किसी एक देश या समाज का नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता का है। शारीरिक रोगों के साथ-साथ एक और गहरी महामारी समाज को भीतर से खोखला कर रही है—मानसिक स्वास्थ्य की महामारी। तनाव, अवसाद, अकेलापन, प्रतिस्पर्धा का दबाव, नशे की लत और आत्महत्या की बढ़ती घटनाएँ इस बात का संकेत हैं कि मानव केवल शरीर से ही नहीं, बल्कि आत्मा और मन से भी बीमार होता जा रहा है। इन सभी कारणों के बीच एक अत्यंत संवेदनशील किंतु अक्सर अनदेखा किया जाने वाला पहलू है—अंतरराष्ट्रीय साज़िशों की आशंका। आज की दुनिया में जैव-प्रौद्योगिकी और जैव-प्रयोगशालाएँ केवल शोध का केंद्र नहीं रहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति-संतुलन का एक साधन बनती जा रही हैं। अरबों डॉलर जैविक अनुसंधान पर खर्च किए जा रहे हैं, किंतु यह प्रश्न स्वाभाविक है कि क्या इन सभी प्रयोगों का उद्देश्य केवल मानव कल्याण ही है। प्रयोगशालाओं में संभावित लापरवाही, गोपनीय अनुसंधान, जैव-हथियारों की होड़ और वैश्विक राजनीति में प्रभुत्व की चाह—ये सभी भविष्य की महामारियों को जन्म देने वाले कारक बन सकते हैं। यह भी देखा गया है कि महामारी के समय दवाइयों, वैक्सीन और चिकित्सा संसाधनों पर नियंत्रण को एक रणनीतिक हथियार की भाँति प्रयोग किया जाता है, जिससे शक्तिशाली राष्ट्र और बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ लाभ में रहती हैं, जबकि गरीब और विकासशील देश सर्वाधिक पीड़ा झेलते हैं। इस प्रकार बीमारी केवल स्वास्थ्य संकट नहीं रह जाती, बल्कि व्यापार, राजनीति और सत्ता के खेल का हिस्सा बन जाती है। ऐसे में यह आशंका और भी प्रबल हो जाती है कि भविष्य में महामारियाँ केवल संयोग नहीं, बल्कि योजनाबद्ध अव्यवस्था का माध्यम भी बन सकती हैं। इस भयावह परिदृश्य में समाधान केवल अस्पतालों की संख्या बढ़ाने, नई दवाओं की खोज या तकनीक पर निर्भर रहने में नहीं है। वास्तविक समाधान जीवन-दृष्टि के परिवर्तन में निहित है। जब तक मानव अपनी आवश्यकताओं को सीमित नहीं करेगा, प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व को स्वीकार नहीं करेगा और संयमित जीवनशैली नहीं अपनाएगा, तब तक महामारियों का यह सिलसिला रुकने वाला नहीं है। शुद्ध आहार, संतुलित दिनचर्या, मानसिक शांति, नैतिक विज्ञान और सामाजिक जागरूकता ही इस संकट का स्थायी समाधान हो सकते हैं। इसके साथ ही वैश्विक स्तर पर जैव-प्रयोगों में पारदर्शिता, अंतरराष्ट्रीय निगरानी तथा मानवता को केंद्र में रखकर नीतियों का निर्माण अनिवार्य है। इतिहास बार-बार यह चेतावनी देता है कि जब-जब मानव ने लालच, सत्ता और अहंकार के कारण अपनी सीमाएँ लांघीं, तब-तब प्रकृति और परिस्थितियों ने महामारियों के रूप में उसे कठोर संदेश दिया। आज भी समय है कि हम केवल बीमारियों से ही नहीं, बल्कि उनके पीछे छिपे कारणों, मानसिकताओं और संभावित साज़िशों से भी सचेत हों। अन्यथा आने वाली महामारियाँ केवल पुस्तकों या समाचारों की सुर्खियाँ नहीं बनेंगी, बल्कि हर घर, हर परिवार और हर पीढ़ी की पीड़ा बन जाएँगी।

— नितिन जैनः संयोजक — जैन तीर्थ श्री पार्श्व पद्मावती धाम, पलवल (हरियाणा) जिलाध्यक्ष — अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन, पलवल मोबाइल : 9215635871

महावीर पब्लिक स्कूल में "आशीर्वचन समारोह" संपन्न

12वीं के विद्यार्थियों को दी गई भावभीनी विदाई

जयपुर. शाबाश इंडिया

महावीर पब्लिक स्कूल में शनिवार को 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के सम्मान में ''आशीर्वचन समारोह'' का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय परिवार ने अपने भावी स्नातकों को बोर्ड परीक्षाओं में सफलता और उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगल आशीष प्रदान किए।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से सजी विदाई बेला

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्रीमती सलोनी जैन (अध्यक्षा, जीटो जयपुर चैप्टर), संस्थाध्यक्ष श्री उमराव मल संघी, मानद मंत्री श्री सुनील बख्शी और प्राचार्या श्रीमती सीमा जैन द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। 11वीं कक्षा के विद्यार्थियों ने अपने वरिष्ठों (सीनियर्स) का तिलक लगाकर स्वागत किया। समारोह में छात्र-छात्राओं ने गायन, नाटक और नृत्य की मनमोहक प्रस्तुतियां देकर समां बांध दिया।

संस्कार और कर्तव्य की शपथ

प्राचार्या श्रीमती सीमा जैन ने विद्यार्थियों को जीवन पथ पर मानवीय मूल्यों और संस्कारों को आत्मसात करने की शपथ दिलाई। मानद मंत्री श्री सुनील बख्शी ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों को लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरंतर परिश्रम करने की प्रेरणा दी। संस्थाध्यक्ष श्री उमराव मल सांघी ने कहा कि विद्यालय द्वारा दी गई शिक्षा और संस्कार कदम-कदम पर उनके सपनों को पूरा करने में सहायक सिद्ध होंगे।

प्रतिभाओं का सम्मान और उत्तरदायित्व का हस्तांतरण

समारोह के दौरान विशिष्ट प्रतिभावान विद्यार्थियों को स्मृति-चिह्न और पट्टिका (सैश) पहनाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का एक मुख्य आकर्षण 'ध्वज मार्च' (फ्लैग मार्च) रहा, जिसमें 12वीं कक्षा के छात्र परिषद ने विद्यालय की जिम्मेदारियों का प्रतीक ध्वज 11वीं कक्षा के छात्रों को हस्तांतरित किया।

राष्ट्र के प्रति संकल्प

अंत में, 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों ने भारत के मानचित्र की रंगोली को मोमबत्तियों से प्रज्वलित कर यह संकल्प लिया कि वे संपूर्ण राष्ट्र में अपने विद्यालय का नाम रोशन करेंगे। विद्यालय के प्रधान छात्र (हेड बॉय) हर्षित चौधरी ने शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। राष्ट्रगान के साथ इस गरिमामयी समारोह का समापन हुआ।

संयम और नियमों के पालन बिना आत्म-कल्याण संभव नहीं: आर्यिका विज्ञाश्री माताजी

नीमच. शाबाश इंडिया

मालवा की पावन धरा पर ऐतिहासिक पंचकल्याणक संपन्न कराने वाले आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज की सुशिष्या, भारत गौरव आर्यिका रत्न 105 विज्ञाश्री माताजी ने नीमच प्रवास के दौरान श्रद्धालुओं को संबोधित किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि 84 लाख योनियों के भ्रमण के पश्चात प्राप्त होने वाला मनुष्य जन्म ही वह एकमात्र अवसर है, जहाँ जीव तपस्या और भक्ति के माध्यम से अपनी आत्मा का उद्धार कर सकता है।

धैर्य और संयम का महत्व

आर्यिका माताजी ने कहा कि पुण्य कर्मों से धन तो अर्जित किया जा सकता है, लेकिन क्रोध पर नियंत्रण और धैर्य रखना कठिन होता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि ₹धैर्य के बिना जीवन में सफलता प्राप्त करना असंभव है। सम्यक जीवन के अभाव में संपत्ति निरर्थक है।₹ उन्होंने शरीर की नश्वरता का उल्लेख करते हुए कहा कि यह शरीर किराए के मकान के समान अस्थायी है, इसलिए हमें पुण्य कर्मों द्वारा स्थायी मोक्ष की मंजिल प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

आध्यात्मिक बोध और माता-पिता की सेवा

प्रवचन के दौरान माताजी ने व्यवहारिक धर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जीते जी माता-पिता की सेवा करना ही वास्तविक धर्म है। मृत्यु के पश्चात आडंबरपूर्ण आयोजन करने का कोई अर्थ नहीं रह जाता। उन्होंने बताया कि जब तक हम राग-द्वेष का त्याग कर वीतरागी भाव नहीं अपनाएंगे, तब तक आत्म-कल्याण का मार्ग प्रशस्त नहीं होगा। आत्मा अमर है, वह केवल शरीर बदलती है; इसलिए समय को व्यर्थ न गँवाकर उसकी महत्ता को समझना चाहिए। प्रतीक जैन सेठी ने जानकारी दी कि धर्म सभा में आर्यिका ज्ञेम्याश्री, ज्ञापकश्री, ज्ञेयश्री और क्षुल्लिका विज्ञप्ति श्री का भी मंगल सानिध्य प्राप्त हुआ। दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष विजय जैन ने बताया कि शनिवार शाम 6:30 बजे 'आनंद यात्रा' का आयोजन किया गया। आर्यिका संघ बही पार्श्वनाथ से जयपुर की ओर प्रस्थान कर रहा है और इसी क्रम में नीमच में उनका प्रवास हुआ है।

आगामी कार्यक्रम

रविवार सुबह 9:00 बजे दिगंबर भजन मंदिर के सभाकक्ष में पुनः प्रवचन होंगे। शनिवार की सभा में उपाध्यक्ष जयकुमार बज, महिला मंडल अध्यक्षा चमेली शाह और आभा विनायका सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन आभा विनायका ने किया।

डॉ. इन्दु जैन ने सर्वधर्म प्रार्थना सभा में किया जैन धर्म का प्रतिनिधित्व, प्राकृत भाषा में की श्रुतवंदना

नई दिल्ली. शाबाश इंडिया

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 78वीं पुण्यतिथि के अवसर पर 'गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति', तीस जनवरी मार्ग पर आयोजित 'सर्वधर्म प्रार्थना सभा' में जैन धर्म का गौरवमयी प्रतिनिधित्व प्रसिद्ध विदुषी डॉ. इन्दु जैन 'राष्ट्र गौरव' द्वारा किया गया। इस गरिमामयी समारोह में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और उपराष्ट्रपति श्री सी.पी. राधाकृष्णन ने बापू की समाधि पर पुष्पांजलि कर उन्हें नमन किया।

जैन प्रार्थना और श्रुतवंदना से गूंजा परिसर

विश्व शांति की मंगल भावना के साथ आयोजित इस प्रार्थना सभा में डॉ. इन्दु जैन ने 'णमो जिणाणं-जय जिनेन्द्र' के उद्घोष के साथ अपनी प्रस्तुति प्रारंभ की। उन्होंने जैन ध्वज के प्रथम पद 'आदि ऋषभ के पुत्र भरत का भारत देश महान, ऋषभदेव से महावीर तक करें सुमंगल गान' के माध्यम से भारतभूमि की महानता का गुणगान किया। इसके पश्चात

उन्होंने मधुर स्वर में प्राकृत अपभ्रंश भाषा में 'श्रुत वंदना' (जैन सरस्वती वंदना) का गायन किया, जिसने पूरे वातावरण को आध्यात्मिक शांति और भक्ति से सराबोर कर दिया। कार्यक्रम के दौरान गांधी स्मृति के उपाध्यक्ष श्री विजय गोयल और विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति में सभी धर्म प्रतिनिधियों का अंगवस्त्र भेंट कर सम्मान किया गया। प्रार्थना सभा के उपरांत प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और उपराष्ट्रपति श्री सी.पी. राधाकृष्णन ने व्यक्तिगत रूप से सभी धर्म गुरुओं का अभिवादन स्वीकार किया। इस अवसर पर डॉ. इन्दु जैन ने प्रधानमंत्री जी का 'जय जिनेन्द्र' कहकर अभिवादन किया।

वैश्विक पटल पर धर्म प्रभावना

उल्लेखनीय है कि डॉ. इन्दु जैन वर्तमान में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग में विशेषज्ञ सलाहकार सदस्य के रूप में कार्यरत हैं। वे अनेक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से जुड़कर निरंतर जैन धर्म की प्रभावना कर रही हैं। इस श्रद्धांजलि सभा में जैन धर्म के साथ ही बौद्ध, ईसाई, पारसी, बहाई, यहूदी, मुस्लिम, सिख और हिंदू धर्म के प्रतिनिधियों ने भी अपनी प्रार्थनाएं अर्पित कीं। दूरदर्शन और आकाशवाणी के माध्यम से इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया गया, जिससे लाखों लोगों ने बापू को दी गई इस संगीतमय भावांजलि और सर्वधर्म प्रार्थना का लाभ उठाया।

विश्व शांति महायज्ञ के साथ महा अर्चना महोत्सव संपन्न

चारित्र ही व्यक्तित्व की असली पहचानः आचार्य प्रसन्न सागर

जयपुर. शाबाश इंडिया। गुलाबी नगरी में साधना के महासागर अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में आयोजित सात दिवसीय 'भगवत जिनेन्द्र महा अर्चना महोत्सव' शनिवार को विश्व शांति महायज्ञ के साथ भक्तिमय वातावरण में संपन्न हुआ। मानसरोवर स्थित शिप्रा पथ के हाऊसिंग बोर्ड मैदान पर आयोजित इस अनुष्ठान में शनिवार को 1008 हवन कुण्डों में मंत्रोच्चार के साथ पूणार्हुति दी गई। इस अवसर पर राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने भी आचार्य श्री से आशीर्वाद प्राप्त किया।

चारित्र शुद्धि और आत्म-विजय का संदेश

धर्म सभा को संबोधित करते हुए आचार्य प्रसन्न सागर महाराज ने मार्मिक संदेश दिया। उन्होंने कहा, चित्र से केवल पहचान होती है, लेकिन चारित्र (आचरण) से व्यक्तित्व की परख होती है। उन्होंने जीवन को अमानत बताते हुए चित्त की सुरक्षा के लिए चारित्र शुद्धि की अनिवार्यता पर बल दिया। आचार्य श्री ने सिकंदर और भगवान महावीर की तुलना करते हुए कहा, सिकंदर विश्व-विजेता था लेकिन स्वयं से हार गया, जबकि महावीर आत्म-विजेता बनकर विश्व के मसीहा बने। जो जाग गया वह महावीर बन गया। उन्होंने श्रद्धालुओं को प्रेरित किया कि तन को मांजने से केवल शरीर सुंदर होगा, लेकिन मन को मांजने से चारित्र सुंदर होगा और यही परमात्मा बनने का मार्ग है।

महायज्ञ और दीक्षा दिवस का उल्लास

अनुष्ठान के अंतिम दिन आचार्य सुन्दर सागर और आचार्य शशांक सागर महाराज का भी सानिध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में गणाचार्य पुष्प दंत सागर महाराज का 46वां दीक्षा दिवस भी हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्रह्मचारी तरुण भैया के निर्देशन में 1008 हवन कुण्डों में आहुतियां दी गईं और विश्व में सुख-शांति एवं समृद्धि की कामना की गई। आयोजन में भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी निशांत जैन, विवेक काला और अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

रविवार के विशेष आकर्षणः विवाह अणुव्रत संस्कार और रथयात्रा

महोत्सव की आयोजन समिति के अनुसार, रविवार 1 फरवरी को जयपुर में पहली बार 'विवाह अणुव्रत संस्कार महोत्सव' का ऐतिहासिक आयोजन होगा।

संस्कार महोत्सवः प्रातः 7:00 बजे से 1 से 25 वर्ष तक के वैवाहिक जीवन वाले दंपतियों को आदर्श जीवन, संयम और सामंजस्य का पाठ पढ़ाया जाएगा। इसके लिए पुरुषों को श्वेत वस्त्र और महिलाओं को केसरिया साड़ी में उपस्थित होना होगा।

विशाल रथयात्राः दोपहर 1:00 बजे हाऊसिंग बोर्ड मैदान से श्रीजी की भव्य रथयात्रा निकाली जाएगी। 12 तीर्थंकरों की प्रतिमाओं के साथ यह यात्रा मीरा मार्ग स्थित आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर पहुंचेगी।

आचार्य संघ का रविवार रात्रि प्रवास मीरा मार्ग पर होगा और सोमवार 2 फरवरी को वे श्याम नगर की ओर मंगल विहार करेंगे।

विश्वविद्यालय में प्रवेश सहायता हेतु रोबोट आईरा का लोकार्पण

तकनीक अपनाने वाला संभाग का प्रथम संस्थान

राकेश शर्मा 'राजदीप'

उदयपुर. शाबाश इंडिया। भटेवर स्थित सर पदमपत सिंघानिया विश्वविद्यालय ने नवाचार और डिजिटल परिवर्तन की दिशा में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। शैक्षणिक सत्र 2026ङ्क27 के लिए संस्थान ने आंतरिक रूप से विकसित कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित रोबोट ह्यआईराह्ल का लोकार्पण किया है। उदयपुर संभाग में इस प्रकार की तकनीक का उपयोग करने वाला यह एकमात्र विश्वविद्यालय बन गया है।

विद्यार्थियों ने तैयार किया 'आईरा'

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पृथ्वी यादव और प्रति-कुलपति प्रो. प्रसून चक्रवर्ती ने प्रेसवार्ता में बताया कि आईरा जैसे दो रोबोट विश्वविद्यालय के छात्रों ने स्वयं दिन-रात परिश्रम कर तैयार किए हैं। यह रोबोट संभावित विद्यार्थियों को वास्तविक समय में प्रवेश प्रक्रिया, पाठ्यक्रमों और परिसर की सुविधाओं की सटीक जानकारी प्रदान करेगा। यह पहल छात्रों की तकनीकी दक्षता और विश्वविद्यालय की छात्र-केंद्रित सेवाओं के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

नियुक्ति और कौशल विकास में कीर्तिमान

नियुक्ति के आंकड़ों को साझा करते हुए डॉ. यादव ने बताया कि गत वर्ष विश्वविद्यालय में शत-प्रतिशत नियुक्तियां हुई थीं, जबकि इस वर्ष अब तक 70 प्रतिशत विद्यार्थी आकर्षक वेतन पर चयनित हो चुके हैं। कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए एक विशेष केंद्र स्थापित किया गया है, जहाँ 'सेवा तकनीशियन उत्कृष्टता कार्यक्रम' संचालित किया जा रहा है।

सतत परिसर और आगामी सम्मेलन

कुलसचिव प्रो. उदयप्रकाश आर. सिंह और अभियांत्रिकी संकाय के अध्यक्ष प्रो. अमित गोयल ने जानकारी दी कि यह उदयपुर का पहला सतत परिसर बन गया है। पर्यावरण संरक्षण के लिए विश्वविद्यालय में विद्युत-रिक्शा, साइकिल और प्राकृतिक गैस आधारित बसों का उपयोग किया जा रहा है। **विशेष आयोजनः** आगामी 2 फरवरी 2026 को सततता की राह विषय पर एक महासम्मेलन आयोजित होगा। **मुख्य अतिथिः** इस आयोजन में भारत के जलपुरुष डॉ. राजेंद्र सिंह मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे।

नए पाठ्यक्रम और भविष्य की राह

विश्वविद्यालय प्रशासन ने घोषणा की कि आगामी सत्र से विधि क्षेत्र के छात्रों के लिए स्नातकोत्तर विधि (एलएलएम) पाठ्यक्रम भी प्रारंभ किया जा रहा है। डॉ. आशुतोष गुप्ता ने बताया कि उद्योग जगत के साथ सहयोग और कौशल आधारित शिक्षा के माध्यम से संस्थान भविष्य के लिए तैयार पेशेवरों का निर्माण कर रहा है।